पुण्यश्लोक - अहिल्याबाई की गाथा और हिंदी नाट्य परंपरा का पुनर्जागरण

पुस्तक समीक्षा - दिव्य प्रकाश

हिंदी साहित्य में नाटक की विधा लंबे समय से उपेक्षित रही है। समकालीन लेखन में जहाँ उपन्यास, कविताएँ और कहानियाँ निरंतर आगे बढ़ती रहीं, वहीं नाट्य लेखन अपेक्षाकृत कम हो गया। ऐसे परिदृश्य में अरुण शेखर की " पुण्यश्लोक अहिल्याबाई की जीवन गाथा" एक उल्लेखनीय कृति के रूप में सामने आती है। यह न केवल ऐतिहासिक चरित्र का पुनर्पाठ है, बल्कि हिंदी नाट्य परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयास भी है।

लेखक ने अहिल्याबाई होल्कर के जीवन को केवल ऐतिहासिक तथ्यों की सूची के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे संवादों और दृश्यों की नाटकीय बुनावट से जीवंत कर दिया है। यह पुस्तक पढ़ते समय पाठक को लगातार यह अनुभव होता है कि वह मंच पर घटित हो रहे दृश्य देख रहा है। यही विशेषता इसे महज़ इतिहास की किताब से अलग करती है।

अहिल्याबाई का व्यक्तित्व बहुआयामी था - करुणा से भरा, न्यायप्रिय और दूरदर्शी। उनके शासनकाल में मंदिरों, धर्मशालाओं और शिक्षा संस्थानों का निर्माण हुआ। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी राज्य को स्थिर रखा और समाज में धर्म, सेवा और न्याय की मिसाल कायम की। नाटक में इन घटनाओं को इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि इतिहास बोझिल नहीं लगता, बल्कि साहित्यिक और नाटकीय आनंद में बदल जाता है।

अरुण शेखर की भाषा सरल, प्रवाहमयी और भावनात्मक है। संवादों में साहित्यिक चमक है और गीतों-लोकधुनों का प्रयोग नाटक को और गहराई देता है। सह-लेखक एन. के. पंत का योगदान इसमें शोध और ऐतिहासिक सटीकता का है, जिससे कृति का आधार और मजबूत हुआ है।

इस कृति की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यह आज के पाठकों को न केवल एक ऐतिहासिक शख्सियत से परिचित कराती है, बल्कि यह भी बताती है कि स्त्री - नेतृत्व और सेवा की भावना आ भी कितनी प्रासंगिक है। समकालीन हिंदी नाट्य - साहित्य के लिए यह नाटक नई ऊर्जा का स्रोत है।

पुस्तक - पुण्यश्लोक (अहिल्याबाई की जीवन गाथा) (नाटक)

लेखक: अरुण शेखर | सह-लेखक: एन. के. पंत

प्रकाशक: इंडिया नेटबुक्स प्रा. लि., नोएडा

मूल्य Rs. 225/- (पेपरबैक)

ISBN - 978-93-48283-00-0

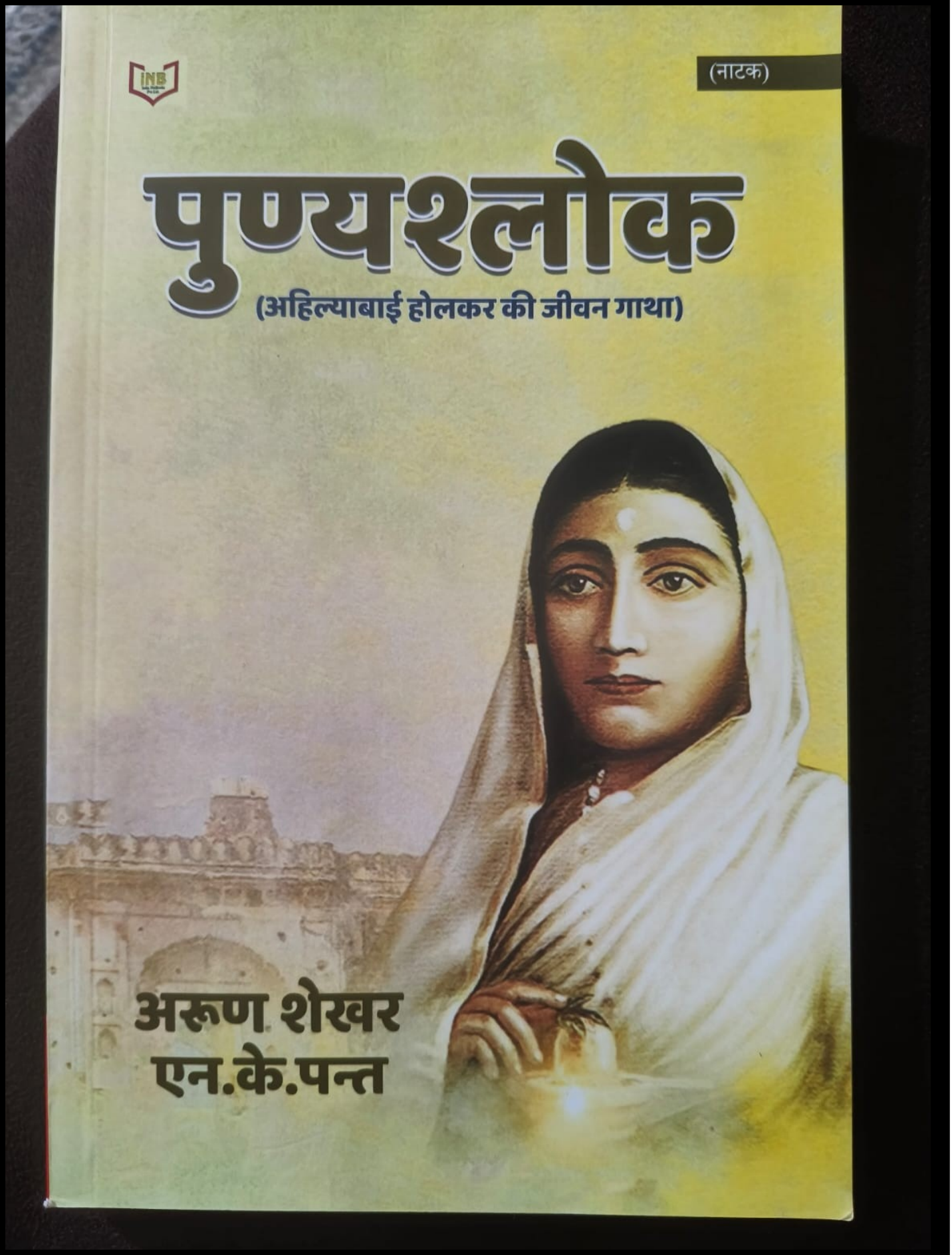

(नाटक)
पुण्यश्लोक
(अहिल्याबाई होलकर की जीवन गाथा)
अरूण शेखर
एन.के.पन्त